है। अपनी इस मृत्यु का वे बहुत सुंदर वर्णन करती हैं।

जीवन का अध्याय बंद हो गया
चेन्न मल्लिकार्जुन पर भरोसा कर
मैंने जीने की चाह छोड़ दी। [24.]

महादेवी के प्रेम में अद्वितीयता है, साहस है। शिव को प्रियतम बनाने और उन्हें पति के रूप में हासिल करने का संकल्प कोई मामूली संकल्प नहीं है। बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बड़े त्याग की, बड़े साहस की जरूरत होती है, अनन्यता और अखंड विश्वास की जरूरत होती है। विराट का स्वप्न, विराट की कल्पना सहज है लेकिन उस स्वप्न को हासिल कर लेना असाधारण बात है। एक रूप में है, दूसरा अरूप, अव्यक्त है, एक सीमा में है, दूसरा असीम, अनहद है, एक गुणाश्रित है, दूसरा गुणों से परे है। दोनों का प्रेम असंभव है, जिसे अक्क महादेवी ने संभव किया। इस प्रेम के लिए उन्होंने खुद को मांजा, साफ किया। भीतर के संसार को मार दिया। सारी इच्छाओं से मुक्ति पायी और इस तरह अनन्यता के महालोक में दाखिल हुई। यहीं वे ऐसे रंग में रंग जाने की बात करती हैं, जो कभी उतरता नहीं। उनका प्रेम अनासक्त प्रेम था। भले वह प्रियतम को पाने की चाह से शुरू हुआ हो, लेकिन अक्क महादेवी ने बाद में इस चाह से भी मुक्ति पा ली।

जब वह अपने प्रियतम से मिलने की कामना से भी मुक्त हो जाती हैं, शिव उनका दरवाजा खटखटाने आ जाता है। महादेवी का प्रेम भक्ति कविता में अन्यतम है क्योंकि यहाँ प्रिया प्रियतम से एक ही नहीं होती, वह प्रियतम की सत्ता में और प्रियतम उसकी सत्ता में रूपांतरित हो जाता है। जहाँ एक तरफ वह कहती हैं कि शिव से मिलकर वे मर गयीं, वहीं वे यह भी कहने से नहीं चूकतीं कि उनके मर जाने पर शिव भी आखिर कैसे जीवित रह सकता है। यह प्रेम में द्वैत का मिट जाना है लेकिन यह एकतरफा होते हुए भी एकतरफा नहीं रहता। इस तरह वे सब कुछ खोकर सब कुछ पा लेती हैं। अक्क महादेवी भक्ति और प्रेम का ऐसा ताना-बाना बुनती हैं, जिसके भविष्य में भी अनेक पाठ-पुनर्पाठ किये जाते रहेंगे, जो अपने कथ्य, अपनी संवेदना और अपनी अद्वितीयता के आलोक से भावी पीढ़ियों के भीतर नया उजाला पैदा करता रहेगा।

****

छायावादी काव्य जगत में श्री सुमित्रा नन्दन् पंत का स्थान

षीना.वी.के
सह आचार्या हिन्दी विभाग
सरकारी ब्राण्णन कॉलेज तलश्शेरी

सारांश ----इस लेख मैं छायावादीकवि सुमित्रा नंदन पंत के परिचय दिए हैं। उनकी छायावादी रचनाओं की विशेषताएं कतिपय उदाहरण सहित प्रस्तुत करके विश्लेषण किये हैं।

बीजवाक्य- हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की छायावादी कविता के महत्वपूर्ण कवि हैं सुमित्रा नंदन पंत। उनकी छायावादी कविताएं हिंदी साहित्य जगत मैं लोकप्रिय हैं। इसके उद्घाटन करना लेख के उद्देश हैं।

हिन्दी साहित्य की मुख्यत: दो विधाएँ हैं। वे है पद्य साहित्य और गध्य साहित्य। पद्य साहित्य हिन्दी साहित्य की एक समृद्ध विधा हैं। अध्ययन की सुविधा केलिए हिन्दी कविता विधा को विभिन्न युगों में बाँटा गया हैं। वे हैं भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग, प्रगतिवाद युग, प्रयोगवाद युग, और नयी कविता का युग आदि। हिन्दी काव्यधारा के विकास में छायावादी युग का अपना महत्व हैं। प्रकृति के विभिन्न तत्वों का परस्पर निवेदन ही छायावाद हैं। हिन्दी छायावादी काव्य के प्रमुख कविगण हैं - जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन् पंत, सूर्यकाँत त्रिपाठी निराला, और महादेवी वर्मा। हिन्दी में छायावाद संबन्धी आलोचनात्मक लेखन मुकुटधर पाण्डेय द्वारा प्रस्तुत हुआ था। छायावाद के प्रमुख कवियों में एक थे सुमित्रानन्दन पंत जिन्होंने छायावादी काव्य साहित्य को अत्यंत समृद्ध किया। श्री सुमित्रानन्दन पंत का जन्म 20 मई सन् 1900 ई. में अलमोडा जिले के कौसानी नामक गाँव में हुआ था। यह स्थान अपनी प्राकृतिक शोभा केलिए अत्यंत प्रसिद्ध हैं। प्रकृति के प्रति श्री पतंजी का अनुराग इसी नैसर्गिक एवं प्राकृतिक सौदंर्य के कारण हैं। प्रकृति उनकेलिए सबकुछ थी। पतंजी प्रकृति का चितेरा हैं। उनकी प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं - वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुँजन, ज्योत्सना, युगाँत, युगवाणी, ग्राप्या, स्वर्ग किरण, स्वर्णधूलि, उत्तरा, रजत शिखर् शिल्पी, सैवर्ण, अंदिमा, वाणी, कला और बूढा चाँद, लोकायतन आदि। श्री पंतजी की काव्यकृतियाँ, उनके मानसिक विकास की श्रृखलाएँ हैं। इनके अन्य काव्यसंग्रह है पललविनी, आधुनिक कवि भाग – दो, चिदंबरा, रश्मिबंध, और तारापथ। पंतजी का प्रकृतिप्रेम अत्यंत् चर्चित हैं। उनकी छायावादी रचनाओं में उनका सहज प्रकृति प्रेम देख सकते हैं।

श्री पंतजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। वे एक परिवर्तन शील और प्रगतिशील कवि रहै है। उन्हें हिन्दी काव्य साहित्य के किसी वाद की सीमा में रखना कठिन कार्य ही हैं। श्री सुमित्रानन्दन पंत की प्रारंभकालीन रचनाएँ उनके छायावादी काव्य के अंतर्गत आती हैं। 1918 में उनकी प्रथम रचना वीना प्रकाशित हुई और इस रचना के द्वारा वे काव्यजगत में आए

और बाद में अनेक काव्यरचनाएँ उनके द्वारा प्रकाशित हो गई जो हिन्दी काव्यजगत में काफी मूल्यवान तथा अनुपम बन पड़ी। सुमित्रानन्दन पंत की अनेक रचनाएँ प्रकाशित हो गई लेकिन उन सबको छायावादी साहित्य के अंतर्गत नहीं रखा जा सकता है। उस दृष्टि से पंतजी की प्रारंभिक रचनाएँ जैसे वीना, ग्रंथी, पल्लव गुजंन उनके छायावादी काव्य हैं। इन ग्रन्थों को उनके सौदर्य युग की रचनाएँ भी कहा जा सकता है। क्योंकि इन रचनाओं में श्री पंतजी की सौन्दर्या त्मक दृष्टि देख सकते हैं। वैयक्तिकता वेदना, सौदर्य, प्रेम, रहस्यात्मकता आदि काव्य के भावक्षेत्र की विशेषता हौ तो लाक्षणिकता , चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, प्रतीकात्मकता आदि विशेषताएँ काव्य की शैलीगत विशेषता हैं। श्री सुमित्रानन्दन पंत की 1918 से 1920 तक की कविताओं के संग्रह है वीना। इस रचना में कालिदास, सरोदिनी नायिडु, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रामकृष्ण परमहँस, स्वामी विवेकानंद आदि के प्रभाव हैं। इस संग्रह की रचनाएँ भावप्रधान हैं। इन रचनाओं में बालसुलभ चपलता, किशोर कल्पना, ज्यादातर मिलते हैं।ग्रंथि उनके दूसरे काव्यसंग्रह हैं जो 1920 में प्रकाशित हुई थी। इसमें प्रेम के विरह पक्ष देख सकते हैं। कुछ लोगों का विचार हैं कि कवि को यथार्थ में एक असफल प्रेम घटना अनुभूत हुई हैं। उसी का प्रतिफलन ही ग्रंथि काव्य का कथा विषय हैं। लेकिन कवि ने स्वयं कहा हैं कि यह उनकी यथार्थ अनुभूति नहीं काल्पनिक भावतल की सृष्टि हैं। प्रगीतात्मकता के तत्व इसमें निहित हैं। पूरी कथावस्तु प्रकृति के सन्द्रर्भ पर विकसित होती हैं। इसकी भाषा आलंकारिक तत्व से पूर्ण और प्रौढ हैं। माना जाता हैं कि ग्रंथि का केंद्रपात्र स्वयं कवि ही हैं।

पंत के तीसरे काव्यसंग्रह हैं पल्लव, यह उत्कृष्ट रचना हैं। वीना और ग्रंथि में यदि बालसुलभ चपलता है तो पल्लव में आते ही कवि की भावना कल्पना, अभिव्यंजना की क्षमता, अनुभूति आदि चरम अत्कर्ष पर पहूँच गए। इसमें कवि प्रेम प्रकृति तथा रहस्य के कवि बनकर आते हैं। वे प्रकृति के मानवीकरण करने में कुशल हैं। वीणा में प्रकृति माता के रूप में थी जबकि पल्लव में प्रकृति कवि की जीवन सहचारी बन गई हैं। पल्लव में कवि के प्रेम की उत्कृष्ट भावना हैं।

गुंजन में कवि के अलग रूप देख सकते हैं। गुँजन कवि के चौथे काव्य संग्रह हैं। इसमें शिवम को महत्व देते हैं। उसमें सौदर्य और कल्पना के अभाव नहीं हैं। सौदर्यात्मक अभिव्यक्ति प्रचुर मात्रा में हैं। गुंजन में कवि की अन्तर्मुखी भावना मिलती हैं। कवि ने गुंजन को अपनी आत्मा की गुंजन कहा हैं। गुंजन में कवि मानव को अत्यंत महत्व देते हैं। इसमें कवि मानव के गीत गाता हैं। उन्होंने गुंजन काव्यसंग्रह में नौकाविहार,चाँदनी, भावि पत्नी आदि अनेक विषय को प्रस्तुत किया हैं। युगाँत पँत के महत्वपूर्ण काव्यसंग्रह हैं जिसमें कवि ने नवीन क्षेत्र को अपनाने की चेष्टा की है। इसमे सन 1934-36 के बीच की रचनाएँ आती है। युगाँत में छायावादी सौदर्य युग का अन्त और प्रगतियुग की भूमिका तैयार हुई है। यह रचना कवि के छायावाद एवं प्रगतिवाद युग के मध्यवर्ती हैं। इस रचना में चिंतन प्रधान कविताएँ और छायावादी प्रकृति को एकदम छोडकर कवि मानवजगत की मंगल आशा से प्रेरित होकर अपने मानवतावादी स्वर को बुलन्द करते हैं। युगाँत अनुभूति प्रधान रचना नहीं हैं। इसमें प्राचीनता प्रकृति संबन्धित गीत आदि भी देश सकते हैं। पंत काव्य के भावपक्ष मे अत्यंत मनोरम तथा आशा- निराशा, सुख – दःख, राग- विराग, हर्ष-विषाद आदि के सम्मिश्रण रूप मिलते हैं। पंत के मानवतावाद के सुन्दर उदाहरण उनके प्रमुख काव्य युगान्त में प्राप्ता होते हैं। प्रकृति-प्रेमी कवि ने युगँत में मानव को सुन्दरतम कहा हैं। उनका कथन है कि सुमन, विहग सब सुन्दर है किंतु मानव सुन्दरतम हैं।

सुन्दर है विहग, सुमन सुन्दर मानव तुम सबसे सुन्दरतम,
निर्मित सबकी तिल सुषमा से तुम निखिल सृष्टि में चिरनिरूपम
। मानव का सबसे बडा महत्व इसमे हैं कि वह मानव हैं। सौन्दर्य बोध के अन्तर्गत नारी सौदर्य प्रकृति सौदर्य, वस्तुगत सौदर्य, कलात्मक सौदर्य आदि उनकी रचनाओं में देखनेयोग्य हैं। नारी के बारे में. पंत ने कहा हैं कि संसार में नारी सर्वश्रेष्ठ हैं। यदि स्वर्ग कहीं हैं पृथ्वी पर तो वह नारी उर के भीतर। नारी में पवित्रता हैं समग्र मंगल की भावना हैं। कवि के शब्दों में नारी के चित्रण देखिए ।

“तुम्हारे छूने में था प्राण,
संग में पावन गँगा स्नान,
तुम्हारी वाणी में कल्याणी
त्रिवेणी की लहरों का गान।”

कवि की नारी सुषमामयी हैं।प्रस्तुत पंक्तियाँ देखिये।

“उषा का छा उर में आवास,
मुकुल का मुख में मृदुल विकास
चाँदनी का स्वभाव मे भास,
विचारों में बच्चों के साँस।”

कवि पंत की नारी विषयक भावना आदर्श पूर्ण हैं।
श्री पंतजी की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति अत्यंत अनुपम हैं । उनकी एक कविता की पंक्ति देखने योग्य हैं।

“नव नव सुमनों से चुनचुनकर
धूलि, सुरभि, मधुरस हिमकण
मेरे उर की मृदु कलिका में
भर दे कर दे विकसित मन।”

सुमित्रामन्दम पंत सौंदर्य दृष्टा और सौंदर्य स्त्रष्टा हैं। वे गहन तत्वचिंतक और मनीषी कवि हैं। वे ईश्वर पर विश्वास करनेवाले आस्तिक कवि के रूप में हमारे सामने प्रकट होतें हैं। उनका विश्वास हैं कि संसार के सृष्टि, स्थिति संहार का कारण अद्वैत ईश्वर हैं। ईश्वर सत्यम, शिवम सुन्दरम हैं। गुंजन में चाँदनी के प्रतीक के रूप में ईश्वर के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया हैं। कवि के अनुसार प्रपंच के समस्त चराचरों में ईश्वर के अस्तित्व हैं। नौकाविहार नामक रचना में पुनर्जन्म सिद्धाँत के चित्रण हैं।

पुनरपि जनंन पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे

शयनं, सिद्धाँत को वे महत्व देते हैं। श्री पंतजी का जीवन दर्शन अत्यंत आदर्शयुक्त हैं। वे संसारे को स्वर्ग बनाना चाहते हैं। और मानव को ईश्वर तुल्य स्थान प्रदान करते हैं। कहा जाता हैं कि काव्य की उत्पत्ति शुद्ध अनुभूती से होती हैं। इन अनुभूतियों में एक वेदना भी हैं। वेदना को काव्य जननी कही हैं। कविवर पंत में वैयक्तिकता और विश्ववेदना का स्वर मुखरित हैं। उनहोंने कहा हैं.

वियोगी होगा पहला कवि
आह से उपजा होगा गान
उमड़कर आँखों से चुपचाप
बही होगी कविता अनजान।
तारों का नभ तारों का नभ
सुन्दर समृद्ध आदर्श सृष्टि।

निष्कर्षत: -

कह सकते हैं कि श्री पंतजी की छायावादी कविताएँ भावपक्ष तथा कलापक्ष की दृष्टि से अनुपम हैं। उनकी रचना में वैयक्तिकता, संगीतात्मकता भावप्रणता आदि विशेषताएँ अन्तलीन हैं। हिन्दी गीतकारों मों श्री सुमित्रानन्दन पंत का महत्वपूर्ण स्थान हैं। रहस्यात्मकता, गीतात्मकता, प्रकृति, सुन्दर, अभिव्यंजनापक्ष आदि उनकी रचनाओं में बखूबी मिलते हैं।पंत की साहित्य यात्रा के विभिन्न सोपान हैं जैसे छायावाद, प्रगतिवाद, आद्यात्मवाद, अरविंद दर्शन, आदि। छायावाद के चार कवियों मे पंत के स्थान प्राउढ़ तथा उन्नत हैं।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ
सुमित्रा नंदन पंत –राजनाथ शर्मा

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री जीवन के चित्र

डॉ.सारिका देवी
डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या उ0प्र0

स्त्री सदैव ही अपनी अस्मिता को लेकर आवाज उठाती रही है। यह बात और है कि इस शोरगुल भरे समाज में उसकी आवाज बहुत मन्द सुनाई देती है। जिसे अधिकतर समाज अनदेखा करता आया है और जिसने भी उसकी आवाज सुनी भी वह बहुत आगे नहीं बढ़ा पाया है। लेकिन प्रयास निरंतर होते रहे हैं और यह प्रयास तब तक जारी रहेगा जब तक स्त्री को उसका संपूर्ण अधिकार न मिल जाये।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक स्त्री के प्रति व्यवहार दोयम दर्जे का ही रहा है। आधुनिक समय में पुरुषवादी सत्ता समाज पर इस तरह हाबी है कि लोग स्त्रियों के बारे में सोचते हैं तो भी पुरुषवादी दृष्टिकोण से जैसे पुरुषों से अलग स्त्रियों का कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही न हो। पुरुष और स्त्री का शारीरिक गठन भी कहीं न कहीं स्त्री के उपेक्षित होने का मुख्य कारण रहा है।

साहित्य में रचानकार अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री अस्मिता को विभिन्न प्रकार से चित्रित करते रहे हैं। लेखक और लेखिका स्त्रियों के जीवन से सम्बन्धित विषमताओं को अपने रचनाओं के माध्यम से चित्रित करते रहते हैं। जिनमें मैत्रेयी पुष्पा का नाम अग्रगण्य है। जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न विसंगतियों को चित्रित करने का कार्य किया है।

मैत्रेयी जी की रचनाओं में मध्यवर्गीय ग्रामीण एवं शहरी महिलाओं के जीवन संघर्ष को बखूबी चित्रित किया गया है। मैत्रेयी जी ने स्त्री जीवन के उन सभी समस्याओं पर प्रकाश डाला है जिसके कारण स्त्रियों का जीवन दुरूह हो गया है। मैत्रेयी जी ने अपने निजी अनुभवों द्वारा उपन्यास लेखन क्षेत्र में वास्तविकता को स्थापित किया है। मैत्रेयी जी की उपन्यासों में वंचित, पीड़ित, दलित एवं पिछड़ी जाति की स्त्रियों के उत्थान को दिखाया गया है। उनके जीवन से जुड़े तमाम सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पहलुओं पर गंभीरतापूर्वक विचार प्रस्तुत किया गया है। साथ ही स्त्री संघर्ष की गाथा भी प्रस्तुत की गई है। मैत्रेयी जी ने स्त्रियों के अधिकारों के प्रति चेतना जागृत करने का संपूर्ण प्रयास किया है। मैत्रेयी जी अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री समाज में वो क्रांति लाना चाहती है, जिसमें स्त्रियों को पुरुषो के समान अधिकार मिले। वह अपनी निर्णय के लिये स्वतंत्र हो। समाज में स्त्री, पुरुष को समान अधिकार प्राप्त हो।

''किसी कार्य का अनुभव बिना कारण के ही नहीं होता है। साफ -साफ दिख रहा है कि स्त्रियों, आदिवासियों और दलितों के बारे में अब तक जो लिखा गया है वह अनुमान के आधार पर है। जबकि सच्चाई आयेगी अनुभव के आधार पर चित्रित करने से''।

अपनी रचनाओं में स्त्री को आधार बनाकर लिखने वाली मैत्रेयी पुष्पा कहानी उपन्यास और स्त्री विमर्श के लिए विशेष रूप से जानी जाती है। इन्होंने विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी की है। मैत्रेयी जी का रचना संसार में प्रमुख स्थान रहा है जिसका प्रमुख कारण उपन्यास विधा रही है। जिसमें इन्होंने ग्रामीण जीवन की यथार्थ घटना को चित्रित किया है जिसमें स्त्री चरित्र प्रमुख रहा है।''मैं अपनी बेटी को पढ़ा लिखाकर बड़ा करूँगी कि मेरे, तुम्हारे बाद वह अपने दुश्मनों का मुकाबला करे।''मैत्रेयी जी ने अपने लेखन का आरम्भ ''स्मृति दंश'' नामक उपन्यास से किया। गाँव की पृष्टिभूमि मे रची बसी जीवन के गन्ध को